NEERAJ®

हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

B.H.D.C.-101

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* **M.A. (Hindi), B.Ed.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. काल-विभाजन और नामकरण की समस्या 1

2. हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि 12

3. आदिकालीन परिस्थितियों का अध्ययन 26

4. आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां 37

5. भक्ति आन्दोलन तथा भक्तिकाव्य का वैचारिक आधार 50

6. भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय 64

7. निर्गुण ज्ञानमार्गी काव्यधारा 75

8. निर्गुण प्रेममार्गी (सूफी) काव्यधारा 89

9. सगुण कृष्णभक्ति काव्यधारा 103

10. सगुण रामभक्ति काव्यधारा 116

11. रीतिकालीन काव्य के प्रेरणास्रोत और परिस्थितियाँ 128

12. रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां : भाग-I 138

13. रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां : भाग-II 149

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल) B.H.D.C.-101

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. अपभ्रंश के उद्‌भव विकास का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'अपभ्रंश का उद्‌भव और विकास'

प्रश्न 2. आदिकालीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-29, 'धार्मिक और सांस्कृतिक पारिस्थितियाँ'

प्रश्न 3. आदिकालीन धर्म सम्बन्धी साहित्य का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-37, 'धर्म संबंधी साहित्य'

प्रश्न 4. ज्ञानाश्रयी भक्तिकाव्य के दार्शनिक आधारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-52, 'ज्ञानाश्रयी भक्तिकाव्य के दार्शनिक आधार'

प्रश्न 5. हिन्दी में सगुण रामकाव्य परम्परा का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-117, 'हिंदी में सगुण रामकाव्य परम्परा'

प्रश्न 6. कृष्ण भक्तिकाव्य में निहित दार्शनिकता को विश्लेषित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-106, 'दार्शनिकता'

प्रश्न 7. रीतिकाव्य के प्रेरणास्रोतों का विस्तार से विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-129, 'रीतिकाल के प्रेरणास्रोत'

प्रश्न 8. रीतिसिद्ध कवियों के काव्य के वर्ण्य-विषयों पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-139, 'रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के वर्ण्य-विषय'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) स्वयंभू

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'स्वयंभू का काव्य'

(ख) द्वैताद्वैतवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-59, प्रश्न 10

(ग) भक्तिकाव्य का महत्त्व

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-69, 'भक्तिकाव्य का महत्त्व'

(घ) सूफीकाव्य में भारतीय एवं आधारतीय तत्व

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-92, 'सूफी काव्य में भारतीय और अभारतीय तत्त्व'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल) **B.H.D.C.-101**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. हिंदी साहित्य के काल-विभाजन के विविध प्रयासों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'हिंदी साहित्य के काल विभाजन के विभिन्न प्रयास', 'नामकरण संबंधी विवाद', पृष्ठ-7, प्रश्न 1

प्रश्न 2. आदिकालीन अपभ्रंश साहित्य का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'अपभ्रंश साहित्य का अवलोकन'

प्रश्न 3. रासो साहित्य के अभिव्यंजना पक्ष की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-41, 'अभिव्यंजना पक्ष'

प्रश्न 4. सगुण भक्ति के दार्शनिक आधारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-53, 'सगुण भक्ति के दार्शनिक आधार'

प्रश्न 5. निर्गुण संतकाव्य के भावपक्ष की विशिष्टताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-78, 'निर्गुण संतकाव्य का भावपक्ष'

प्रश्न 6. रामकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-118, 'सगुण रामभक्ति धारा में नारी का स्वरूप', पृष्ठ-119, 'सगुण रामभक्ति धारा में रामभक्ति का निरूपण', 'जीवन दर्शन और जीवन मूल्य', 'लोक मंगल की भावना', 'अन्य विशेषताएँ'

प्रश्न 7. रीतिकालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-129, 'रीतिकालीन परिस्थितियां'

प्रश्न 8. रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-149, 'रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) भविसयत्त कहा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-42, 'भक्तिसयत कहा'

(ख) माया और अविद्या

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-54, 'माया और अविद्या'

(ग) सूरदास

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-104, 'सूरदास (1478-1583 ई.)', पृष्ठ-115, प्रश्न 4

(घ) सूफी मत और सिद्धान्त

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-89, 'सूफी मत और सिद्धांत'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

काल-विभाजन और नामकरण की समस्या

1

परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन की सुविधा के लिए कुछ विद्वानों ने इसे कुछ विशिष्ट काल-खंडों में विभाजित किया है। काल-विभाजन से साहित्य की मुख्य धाराओं के विषय-बोध में वैज्ञानिकता और सैद्धान्तिक गम्भीरता का पुट आ जाता है। सामान्यत: किसी भी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन कृति, कर्ता, पद्धति या शैली तथा विषय के आधार पर किया जाता है। जब किसी काल में प्रवृत्ति का मुख्य आधार नहीं मिलता, तो उस युग के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यकार के नाम से उस सम्पूर्ण कालखंड की साहित्यिक विशेषताओं को जानने का प्रयास किया जाता है। काल-विभाजन के लिए यदि कोई विशिष्ट आधार नहीं मिलता, तब समग्र काल को आदि, मध्य और आधुनिक काल में विभाजित कर लिया जाता है। वर्तमान समय काल-विभाजन का यह रूप पर्याप्त प्रचलित है, परन्तु यह वैज्ञानिक कसौटी पर खरा नहीं उतरता। वस्तुत: हिंदी-साहित्य के इतिहास के अध्ययन के लिए प्रवृत्तियों पर आधारित काल-विभाजन को ही अधिक उचित कहा जा सकता है, जैसे–भक्तिकाल, रीतिकाल आदि।

अध्याय का विहंगावलोकन

काल-विभाजन और नामकरण की आवश्यकता

इतिहास बोध को हम आलोचनात्मक चेतना कह सकते हैं। यह चेतना जीवन और संस्कृति की पर्यवेक्षिका स्वरूप होती है। इससे समाज और साहित्य के परस्पर सम्बन्धों को हम भली-भाँति समझ लेते हैं, इसलिए साहित्य का इतिहासकार इन परस्पर सम्बन्धों परिवर्तनों का जितनी गहराई से अनुभव करेगा, वह उतना ही प्रमाणिक काल विभाजन प्रस्तुत करेगा, इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की प्रखर आलोचनात्मक दृष्टि की ओर हम बार-बार देखते हैं। उन्होंने अपने शोधपूर्ण ग्रन्थ '*हिंदी साहित्य का इतिहास*' में लिखा है,

"शिक्षित जनता की जिन-जिन अवृत्तियों के अनुसार हमारे सहित्य के स्वरूप में जो-जो परिवर्तलन होते आए हैं, जिन-जिन प्रभावों की प्रेरणा से काव्यधारा की भिन्न-भिन्न शाखाएँ फूटती रही हैं, उन सबके सम्यक् निरूपण तथा उनकी दृष्टि से किए हुए सुसंगत काल-विभाजन के बिना साहित्य के इतिहास का सच्चा अध्ययन कठिन दिखाई पड़ता था। सात-आठ सौ वर्षों की संचित ग्रंथ राशि सामने लगी हुई थी, पर ऐसी निर्दिष्ट सारणियों की उद्भावना नहीं हुई थी, जिनके अनुसार सुगमता से प्रभूत सामग्री का वर्गीकरण होता।"

उपर्युक्त कथन का अभिप्राय यही है कि ठोस इतिहास की दृष्टि से ही सुसंगत काल-विभाजन किया जा सकता है। इससे ही इतिहास का अध्ययन सुगम हो सकता है।

काल-विभाजन और नामकरण का आधार

हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन से सम्बन्धित तीसरी समस्या काल-विभाजन और नामकरण की है। मोटे तौर पर साहित्य के विकास के वर्गीकरण की दो पद्धतियां सम्भव हैं–

1. साहित्यिक विकास का युगपरक वर्गीकरण तथा
2. साहित्यिक विकास का स्वरूपगत वर्गीकरण।

युगपरक वर्गीकरण विभिन्न युगों की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर किया जाता है, क्योंकि प्रत्येक युग की सामाजिक चेतना और साहित्यिक प्रवृत्तियों में बहुत गहरा सम्बन्ध होता है। हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने इसी युगपरक पद्धति को अपनाते हुए हिंदी साहित्य के इतिहास को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल आदि खण्डों में विभाजित किया है। साहित्यिक विकास का स्वरूपगत वर्गीकरण साहित्य की आकृति और प्रकृति के आधार पर किया जा सकता है। आकृति के आधार पर विधागत वर्गीकरण होता है।

www.neerajbooks.com

हिंदी साहित्य के कालविभाजन की समस्या

साहित्य में एक प्रकार की प्रवृत्ति गतिशील होती है, तो उसके समानान्तर कभी-कभी प्रतिरोधी प्रवृत्ति भी गतिशील हो उठती है। इससे काल-विभाजन की बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है।

काल-विभाजन की दूसरी समस्या संक्रांति काल को लेकर होती है। संक्रमण काल के जिन बिन्दुओं पर इतिहास के दो युगों को तोड़ा जाता है, वहाँ इतिहासकार की चिन्तनधारा ही विच्छिन्न नहीं होती है, अपितु इस टूटने की प्रक्रिया में बहुत कुछ दूर हो जाता है।

काल-विभाजन की तीसरी समस्या है–साहित्य के इतिहास में और राजनीतिक इतिहास में समानता को मान लेना। इससे सही काल-विभाजन नहीं हो सकता है।

हिंदी साहित्य के काल-विभाजन के विभिन्न प्रयास

हिंदी साहित्य के काल-विभाजन की दिशा में प्रयत्न जॉर्ज ग्रियर्सन तथा मिश्रबन्धुओं के द्वारा प्रारम्भ हो चुके थे, किन्तु हिंदी साहित्य के अधिकतर इतिहासकारों ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काल-विभाजन और विभिन्न कालों के नामकरण को ही मुख्यत: स्वीकार किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी-साहित्य के आदिकाल को वीरगाथा काल (संवत 1050 से संवत 1375 तक), पूर्वमध्यकाल को भक्तिकाल (संवत 1375 से संवत 1700 तक), उत्तर-मध्यकाल को रीतिकाल (संवत 1700 से संवत 1900 तक), आधुनिक काल को गद्य काल (संवत 1900 से अब तक) नाम से अभिहित किया है। साहित्य की सतत विकासशील प्रवृत्ति के कारण कोई भी काल-विभाजन और नामकरण अन्तिम नहीं कहा जा सकता, किंतु हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने शुक्ल जी के काल-विभाजन को सबसे अधिक मान्य माना है।

नामकरण संबंधी विवाद

आदिकाल

हिंदी साहित्य के आदिकाल के नामकरण के विषय में विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न मत प्रस्तुत किए हैं। इन सभी इतिहासकारों ने अपने मतों की पुष्टि के लिए विभिन्न विचार प्रस्तुत किये हैं। **आचार्य रामचन्द** ने आदिकाल (सं. 1050 से 1375 वि.) को वीरगाथाओं की प्रमुखता के कारण **वीरगाथा काल** नाम दिया है।

शुक्ल जी द्वारा जिन बारह रचनाओं के आधार पर आदिकाल को वीरगाथा काल की संज्ञा दी गई है, उन ग्रन्थों में 'कीर्तिलता' तथा 'कीर्तिपताका' अपभ्रंश भाषा की रचनाएं हैं। 'पदावली' एवं 'खुसरो की पहेलियों' का वीरगाथाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। बीसलदेव रासो शृंगारिक विरह काव्य है। खुमान रासो एवं पृथ्वीराज रासो अर्द्ध-प्रामाणिक ग्रन्थ हैं। खुमान रासो में महाराणा प्रताप तक के समय का वर्णन है।

शुक्ल जी के सामने उक्त बारह ग्रन्थों की सीमित सामग्री थी। परवर्ती विद्वानों ने आदिकाल में रचित अन्य अनेक ग्रन्थों की खोज की है। **महापण्डित राहुल सांकृत्यायन** तथा **डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल** ने नाथों, सिद्धों तथा बौद्धों की अनेक रचनाओं का पता लगाया है। उस विशाल साहित्य के सामने इस काल की वीरगाथात्मक रचनाएं इस कालखंड के नामकरण में अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं ठहरतीं। शुक्ल जी के सामने *संदेश रासक, पद्म चरित्र, पाहुड़ दोहा, हरिवंश पुराण, जसहर चरित्र, भविसयत्त कथा* आदि रचनाओं की सामग्री नहीं थी। अत: शुक्ल जी द्वारा प्रतिपादित 'वीरगाथा काल' नाम को उचित नहीं कहा जा सकता।

चन्द्रधार शर्मा गुलेरी तथा **डॉ. धीरेन्द्र वर्मा** ने इस काल को **अपभ्रंश काल** कहा है। आदिकाल के साहित्य में अपभ्रंश भाषा की प्रधानता को स्वीकार करते हुए उन्होंने इस काल को अपभ्रंश काल मानना ठीक समझा है। हमारी दृष्टि में भाषा के आधार पर किसी काल का नामकरण उचित नहीं माना जा सकता। साहित्य के इतिहास को कालखंड का नामकरण उस युग विशेष की प्रवृत्तियों एवं प्रतिपाद्य विषय के आधार पर होना चाहिए। भाषाशास्त्र की दृष्टि से भी अपभ्रंश तथा हिंदी दो भिन्न-भिन्न भाषाएं हैं। इस काल को यदि अपभ्रंश काल कहा जाए, तो पाठक का ध्यान हिंदी-साहित्य की ओर न जाकर अपभ्रंश साहित्य की ओर आकृष्ट होता है। इस कारण आदिकाल को अपभ्रंश काल कहना उचित प्रतीत नहीं होता।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस काल को **संधि-काल** की संज्ञा दी है। उन्होंने इसे चारण काल भी कहा है। डॉ. वर्मा ने अपभ्रंश भाषा के अन्त तथा हिंदी भाषा के प्रारम्भ के कारण इसे सन्धि-काल कहा है, किंतु इस काल में केवल चारण कवियों का प्राधान्य नहीं रहा। इस कारण इसे सन्धि-काल या चारण काल कहना उचित नहीं है।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इस काल को **बीजवपन काल** कहा है परन्तु यह नाम भी समीचीन नहीं कहा जा सकता। साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर इस काल के कवियों ने प्राचीन रूढ़ियों को अपनाया और इसे साहित्य में स्थान मिला। उस समय का साहित्यकार अत्यन्त सजग एवं उद्‌बुद्ध था। इस नाम से ऐसा भ्रम होता है, मानो हिंदी-साहित्य का प्रारम्भ किसी परम्परा से सम्बद्ध नहीं है।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने इस काल को **सिद्ध-सामन्त काल** कहना ठीक समझा है। उन्होंने इस काल का प्रारम्भ आठवीं शताब्दी माना है। सिद्ध-सामन्त काल किसी साहित्यिक पद्धति का परिचायक नहीं है। सामन्त शब्द से पाठक का ध्यान अनायास ही उस काल के कवियों की ओर न जाकर राजपूत सामन्तों की ओर जाता है। इस प्रकार सिद्ध-सामन्त काल नाम को भी सार्थक नहीं कहा जा सकता।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी इस काल को **'आदिकाल'** कहना ही अधिक उचित समझते हैं। उन्होंने इस काल के साहित्य को अन्तर्विरोधों का साहित्य कहा है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य के प्रारम्भिक युग को 'आदिकाल' कहना ही अधिक समीचीन है। इस काल का

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

साहित्य काफी समृद्ध है। आदिकाल नाम किसी प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति पर आधारित न होने पर भी इस नामकरण की एक विशेषता यह है कि इससे किसी विशिष्ट प्रवृत्ति के प्रति अनुचित पक्षपात तथा किसी अन्य के प्रति अवांछनीय उपेक्षा का भाव प्रकट नहीं होता। इस कारण अन्य नामों की अपेक्षा इस युग को आदिकाल की संज्ञा देना ही अधिक उचित है।

भक्तिकाल

चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक (1318 ई. से 1643 ई) का कालखंड हिंदी साहित्य के इतिहास में 'भक्तिकाल' को कहा जाता हैं। इस काल खंड के नामकरण का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को है। कुछ विद्वान इसे पूर्व मध्यकाल भी कहते हैं। हिंदी साहित्येतिहास लेखन में ये दोनों नाम एक साथ चलते हैं, पर 'भक्तिकाल' नाम को अधिक मान्यता मिली है, क्योंकि अगर आदिकाल के समान इस काल में भी कोई प्रवृत्ति न होती, तो 'पूर्व मध्यकाल' नाम से काम चलाया जा सकता था, पर इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति 'भक्ति' स्पष्ट होने के कारण यह नाम प्रासंगिक है।

रीतिकाल

हिंदी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण में आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा तत्कालीन युगीन प्रवृत्तियों को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है। विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रमुखता के आधार पर ही उन्होंने साहित्य के अलग-अलग कालखण्डों का नामकरण किया है। इसी मापदंड को अपनाते हुए हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल अर्थात 1700-1900 वि. के कालखण्ड में रीति तत्त्व की प्रधानता होने के कारण शुक्ल जी ने इस कालखण्ड को 'रीतिकाल' नाम दिया।

इस समय अवधि में अधिकांश कवियों द्वारा काव्यांगों के लक्षण एवं उदाहरण देने वाले ग्रंथों की रचना की गई। अनेक हिंदी कवियों द्वारा आचार्यत्व की शैली अपनाते हुए लक्षण ग्रंथों की परिपाटी पर अलंकार, रस, नायिका भेद आदि काव्यांगों का विस्तृत विवेचन किया गया। रीति की यह धारणा इतनी बलवती थी कि कवियों /आचार्यों के मध्य इस बात पर भी विवाद होता थी कि अमुक पंक्ति में कौन-सा अलंकार, रस, शब्दशक्ति या ध्वनि है। इन्ही सब तत्त्वों या प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए उत्तर मध्यकाल का नामकरण 'रीतिकाल' के रूप में किया गया।

हालांकि मिश्रबंधुओं ने इसे 'अलंकृत काल कहा', डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने इसे कला-काल नाम दिया, पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे 'शृंगार काल' नाम दिया। किंतु इन सभी नामों पर सहमति नहीं बन पाई, क्योंकि कोई भी नाम युग के साहित्य की संपूर्ण साहित्यिक प्रवृत्तियों को पहचान नहीं देता। अत: रीतिकाल नाम ही समीचीन है।

आधुनिक काल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास के चतुर्थ कालखंड को गद्य की प्रमुखता के कारण गद्यकाल नाम दिया है और इसकी समय सीमा संवत् 1900 वि. से 1980 वि. अर्थात सन् 1843 ई. से 1923 ई. स्वीकार की है। आधुनिक काल के लिए जो विभिन्न नाम दिए गए हैं, वे इस प्रकार हैं–

1.	गद्यकाल	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2.	वर्तमान काल	मिश्रबंधु
3.	आधुनिक काल	डॉ. रामकुमार वर्मा
4.	आधुनिक काल	डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

आचार्य शुक्ल ने इस काल का नाम गद्यकाल इसलिए रखा, क्योंकि इस काल में गद्य की प्रधानता परिलक्षित हो रही है तथापि गद्यकाल कहने से इस काल का प्रचुर परिमाण में लिखा गया पद्य साहित्य उपेक्षित-सा हो जाता है, अत: इस काल को आधुनिक काल कहना अधिक उपयुक्त है।

आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेंदु काल कहा गया हैं, क्योंकि यह नामकरण भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर किया गया है। भारतेंदु जी का रचनाकाल सन 1850 ई. से 1885 ई. तक रहा है।

भारतेंदु युग के प्रमुख कवियों में भारतेंदु के अतिरिक्त बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, दुर्गादत्त व्यास, वियोगी हरि आदि हैं।

हिंदी नवजागरण से अभिप्राय सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत के हिंदी प्रदेशों में आये राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जागरण से है। हिंदी-नवजागरण की सबसे प्रमुख विशेषता हिंदी-प्रदेश की जनता में स्वातंत्र्य-चेतना का जागृत होना है। इसका पहला चरण स्वयं 1857 का विद्रोह था।

जागरण सुधार काल/द्विवेदी युग (1900-1818)– आधुनिक काल का दूसरा युग सन् 1900 ई. के करीब आरंभ होता है। इस काल का नाम द्विवेदी युग दिया गया है। इस काल का आरम्भ अधिकार विद्वान् आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादन समय से ही मानने- स्वीकारने के पक्षधर हैं। यह सर्वविदित है कि 'सरस्वती' पत्रिका का आरंभ आचार्य द्विवेदी ने सन् 1903 ई. से ही किया था। इसके माध्यम से उन्होंने साहित्य के मानक स्वरूप को स्थापित किया इस दृष्टि से उन्होंने न केवल गद्य की ओर ही अपनी दृष्टि दौड़ाई, अपितु पद्य की ओर भी । इस प्रयास में उन्होंने भाषा की शुद्धता और मर्यादाबद्ध नैतिक साहित्य पर विशेष बल दिया।

यह सुस्पष्ट हो चुका है कि भारतेन्दु युग का साहित्य प्रेरणादायक और उमंगमय था। इससे भिन्न द्विवेदी युग का साहित्य हर प्रकार से अनुशासनात्मक आधार प्रधान युग था। हिंदी काव्य के क्षेत्र में द्विवेदीजी ने व्यवहृत छन्दों के स्थान पर संस्कृत पदावली को स्थान दिया। इससे इस पदावली को व्यापक स्थान मिलने लगा। इस प्रकार हिंदी के इस युग में भक्ति कालीन और रीतिकालीन परम्परा की विदाई हो गयी। उसके स्थान पर संस्कृत साहित्य की पद्धति

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रतिष्ठित होने लगी। इस काल में एक बात और हुई वह यह कि कविता में इतिवृत्तात्मकता की प्रवृत्ति का प्रचार-प्रसार दिनोंदिन बढ़ता ही गया।

छायावाद काल (1918-1936)—छायावाद के आरंभ के विषय में साहित्य-समीक्षकों की आम सहमति है। इस काल का आरंभ साहित्य-समीक्षक द्विवेदी युग के अवसान काल से ही मानते हैं। दूसरे शब्दों में छायावाद का आरंभ हिंदी के इतिहासकारों ने सन् 1920 ई. स्वीकार किया है।

यह भी सच है कि द्विवेदी युग में ही छायावादी साहित्य की झलक दिखाई देने लगी थी। सन् 1916 ई. में निराला की 'जूही की कली' प्रकाश में आयी थी। उसके बाद सन् 1918 ई. में प्रसाद की कविता 'झरना' और पंत की कविता 'पल्लव' की कुछ कविताएं सन् 1920 ई. के लगभग प्रकाशित हुई थी। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि सन् 1915 ई. के आस-पास छायावादी साहित्य का उदय होने लगा था, लेकिन इसका पूरा प्रभाव तो सन् 1920 ई. के आस-पास ही दिखाई देता है, इसलिए इसका समय विद्वानों ने यही स्वीकार किया है।

छायावाद का अंतिम विद्वानों ने सन् 1936 ई. ही माना है। उस समय छायावादी साहित्य की अति महत्त्वपूर्ण रचनाओं के दर्शन हो चुके थे। सन् 1936 ई. में प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ कृति 'कामायनी' निराला की 'राम की शक्ति पूजा', प्रेमचन्द का 'गोदान' आदि रचनाएं छायावादी युग की सर्वोच्च और सर्वोकृष्ट रचनाएं स्वीकृत हुईं। यही नहीं, इसी वर्ष 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना भी हुई। इन तथ्यों के आधार पर ही साहित्य-समीक्षकों ने छायावादी साहित्य का अंतिम समय सन् 1936 ई. ही माना है।

छायावाद के नाम पर सभी विद्वानों की एक ही राय है। छायावादी साहित्य जो एक विशिष्ट साहित्यिक मूल्य दिखाई देता है, उसमें रोमांटिक भाव बोध जहाँ पुरानी रूढ़ियों से छुटकारे की आकांक्षा करता है, वहीं दूसरी ओर, यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भी आजादी का स्वप्न देखता है। यह दिलचस्प बात है साहित्य में छायावाद और राजनीति का आगमन और महात्मा गांधी के आगमन का लगभग एक ही साथ हुआ था। यही कारण है कि मुंशी प्रेमचन्द ने अपने कथा-साहित्य में गांधी युग की विराट् तस्वीर खींची थी। छायावादी साहित्य में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का सर्वाधिक प्रभाव रहा। यह इसलिए उनकी आध्यात्मिक और रहस्यवादी कविताओं ने इस साहित्य को मुख्य रूप से अंकुरित किया। इसीलिए इस साहित्य में रहस्यात्मक अनुभूति के और अभूर्त भाव की अभिव्यंजना के लिए लाक्षणिक और चित्रमयी शैली भाषा में रचनाएं सामने आने लगीं। इस प्रकार अनूभूति, दर्शन और कल्पना के योग से एक सर्वथा नवीन और अभूतपूर्व काव्य-स्वरूप प्रत्यक्ष हो उठा।

प्रगति-प्रयोग काल (1936-1953)—छायावादोत्तर साहित्य में विविध प्रकार की काव्य प्रवृत्तियाँ निरंतर परिवर्तनशील रहीं। इस साहित्य में विविध प्रकार के आन्दोलन उठ खड़े हुए, जैसे—प्रगतिवाद, व्यक्तिवाद, गीतिकाव्य, राष्ट्रीय- सांस्कृतिक कविता, प्रयोगवाद, नई कविता, नई कहानी, अकविता आदि । यहाँ इस प्रकार के आन्दोलनों के नामकरण और समय-निर्धारण की कोई प्रासंगिकता नहीं है। यह इसलिए कि उनके काल-विभाजन और नामकरण के विषय कोई मत-भिन्नता नहीं है। दूसरी बात यह है कि इस काल का भी अन्य कालों के समान महत्त्व और प्रभाव है।

नवलेखन काल (1953 से आगे)—स्वतंत्रता के बाद लिखी गई कविताओं को 'नई कविता' कहा गया, जिनमें नए मूल्यों और नए शिल्प विधान का अन्वेषण किया गयां। 'नई कविता' नाम पर यह आपत्ति उठायी जाती है कि नयापन किसी साहित्य की विकासशील परंपरा का द्योतक होता है। अत: इस काल की कविता को नयी कविता क्यों कहा गया? फिर भी नई कविता नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गई उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपने विषय और शिल्प में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट हैं। इस नई कविता के अनेक स्रोत फूटे और कई काव्यांदोलन सामने आए, जैसे—अकविता, अतिकिविता, अस्वीकृत कविता आदि। इसी प्रकार कहानी में भी नई कहानी का जोर चल पड़ा। साहित्य के नए-नए रूप और आयाम सामने आए। इन सभी प्रवृत्तियों को एक साथ समेटना विवादास्पद हो सकता है, पर सुविधा की दृष्टि से नवलेखन काल नाम समीचीन है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों में से सही उत्तर चुनकर (√) का निशान लगाएँ—

इतिहास के काल-विभाजन और नामकरण की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

(क) अध्ययन की सुविधा के लिए

(ख) इतिहास को सही ढंग से समझने के लिए

(ग) काल-विभाजन और नामकरण की कोई आवश्यकता नहीं है

(घ) क और ख दोनों सही हैं

उत्तर—(घ) क और ख दोनों सही हैं।

प्रश्न 2. काल-विभाजन और नामकरण का मुख्य आधार क्या होता है?

उत्तर—हिंदी साहित्य का इतिहास एक हजार अथवा उससे अधिक वर्षों की साहित्यिक धारा का इतिहास है। इस काल-विभाजन में आये इतिहास का भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न भिन्न रूपों में वर्गीकरण किया है और उसका भिन्न-भिन्न नामकरण किया है। इसमें **आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. श्यामसुंदर दास, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामकुमार वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, मिश्रबंधु आदि** विद्वान सम्मिलित हैं। आचार्य शुक्ल हिंदी साहित्य के प्रामाणिक इतिहासकार हैं। इनके परवर्ती अधिकांश इतिहासकारों ने इन्ही के काल-विभाजन के मानदंड को स्वीकार किया है। इनके अनुसार हिंदी साहित्य का इतिहास चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—

www.neerajbooks.com